गीताश्री की कहानियों में चित्रित सामाजिकसरोकार

पूनम प्रवीण पाटील

शोध छात्रा, शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर।.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263873

ABSTRACT:

यह शोध-पत्र आधुनिक कथाकार एवं वरिष्ठ पत्रकार गीताश्री की कहानियों में चित्रित सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण करता है। उनके साहित्य में नारी जीवन के संघर्ष और विसंगतियाँ मुख्य रूप से परिलक्षित होती हैं। 21वीं सदी के बदलते परिवेश में, गीताश्री ने टूटते दांपत्य संबंध, युवा पीढ़ी के स्वतंत्र निर्णय और वृद्धों के एकाकी जीवन जैसे संवेदनशील सामाजिक आयामों को अपनी कहानियों में यथार्थवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। 'सैंया निकस गए, मैं ना लड़ी थी' और 'बाबूजी का बक्सा' जैसे दृष्टांतों के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि उनकी कहानियाँ आधुनिक परिवार और समाज की जटिलताओं तथा बदलते मानवीय मूल्यों का गहरा चित्रण करती हैं, जो पाठकों को चिंतन के लिए प्रेरित करता है।

KEYWORDS:

गीताश्री की कहानियाँ, सामाजिक सरोकार, नारी-जीवन/स्त्री-संघर्ष, पारिवारिक विसंगतियाँ, आधुनिक कथा साहित्य.

साहित्य और सामाजिक सरोकार विषय का अध्ययन करने से पहले यह विचार करना आवश्यक है कि साहित्य के संदर्भ में सामाजिक सरोकार से आशय क्या हो सकता है?समाज में वे कौन से सरोकार है जो साहित्य का प्रयोजन हो सकते है। प्रत्येक साहित्यकार अपने समाज में घटित प्रत्येक परिस्थितियों का अध्ययन करके घटित समस्या और उनके उपाय के बारे में सोचता है और उसे दूर करने का प्रयास करता है।

साहित्य और सामाजिक सरोकार का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। किसी साहित्यकार के लिए सामाजिक सरोकार बहुत महत्त्वपूर्ण होते है। साहित्यकार का सृजन कार्य पाठको के मनोरंजन के लिए नहीं बल्किउसके भीतर सामाजिक सरोकार निहित रहते है। उनका उद्देश व्यक्ति जीवन से

जुड़ा होता है। समाज की विसंगतियाँ,मानव जीवन में घटित घटनाएँ रचनाकार की कृतियाँ में स्पष्ट दिखाई देता है। रचनाकार अपने साहित्य में अपने आसपास के परिवेश को उजागर करता है।

साहित्य का अर्थ "लिपिबद्धविचार,ज्ञान,ग्रंथों का समूह,वाङ्मय"1 आदि है। सामाजिक शब्दका अर्थ,"अपने समूह के प्रति जागरूकता"2 से है। शिक्षार्थी हिंदी शब्दकोश के अनुसार,'सरोकार'को आपसी व्यवहार का संबंध,वास्ता और लगाव"3 से संबंधित किया गया है। डॉ. नंदलाल मेहता वागीरा के अनुसार "साहित्य के सामाजिक सरोकार तो वे मानवीय मूल्यों है जो हर देश और हर युग में मनुष्य हृदय को निजी राग-द्वेष से मुक्त कर उसे शेष जगत के साथ तादात्म्य भाव स्थापित की रागात्मक से धन्य करते हैं। ऐसे मानवीय मूल्यों में सत्य, प्रेमक्षमा, दया, करुणा, स्नेह, अनुराग, वात्सल्य, वीरता, अहिंसा, औदार्य, मैत्री, सहयोग, संयम, कर्तव्य-पालन, व्यवहार-माधुर्यऔर संवर्भूत हितैषिता जैसे लोक हितकारी मनोभाव लक्षित किए जा सकते है। वे सभी मानवीय मूल्य सत्य, शिव और सुंदर महाभाव समष्टि की आचरणमूलक अभिव्यक्तियाँ है।"4

साहित्य का अर्थ सहित अर्थात सबका हित होता है। सामाजिक का अर्थ समाज से जुड़ा हुआ अथवा समुह के प्रति जागरुकता से है। सरोकार का अर्थ प्रयोजन वास्ता,ताल्लुक,पहलू,संदर्भ,आयाम संदर्भसे है। सरोकार मूलत फारसी भाषा का शब्द है।'सरोकार' शब्दका सामान्य अर्थकिसी विषय,वस्तु और घटना के परस्पर संबंध से है। किसी भी व्यक्ति के लिए महत्त्वपूर्ण तथा चिंताजनक विषय अर्थात जो शोचनीय है, जिसमें वह स्वयं शामिल हैं, वही उसके सरोकार होते है। समाज से सरोकार प्रत्येक साहित्यकार के लिए महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक सरोकार से तात्पर्य साहित्य में समाज की स्थिति का चित्रण से है,जो वास्तविक रूप से समाज में घटित हो रही है। सामाजिक सरोकार को मानवीय संबंध, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक सरोकार के रूप में विभाजित कर सकते है।

आधुनिक कहानियों से संबंधित लेखिकाओं में गीताश्री की कहानियाँ बहोत दिलचस्पी हैं। गीताश्री के साहित्य में प्रमुखता से नारी के सामाजिक संघर्ष को नये दृष्टिकोन में प्रस्तुत किया है। 21 वीं सदी की

महिला वरिष्ठ पत्रकार और रचनाकार गीताश्री ऐसी लेखिका है जिन्होंने अपनी कहानी उपन्यास में सामाजिक जीवन के बदलते दास्ताने को प्रत्येक आयाम तथा पारिवारिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक जीवनपर अपनी लेखनी चलाई है।गीताश्री मूलत: स्त्री जीवन की कहानिकार है। गीताश्री की कहानियों की एक बड़ी विशेषता यह है कि वे प्रचलित अर्थों में सताई गई स्त्रियों की कहानियाँ नहीं है,न ही वे स्त्री मुक्ती का घोषणापत्र बनाती है। लेकिन यह भी सच है कि ये कहानियाँ स्त्री जीवन की विडंबनाओं को पूरी शिद्दत से सामने लाती है। वो न केवल एक सफल कहानीकार,उपन्यासकार या पत्रकार रही बल्कि साथ ही साथ आधुनिक युग की प्रमुख यात्रा लेखिका भी है।

समाज की मूल इकाई परिवार है। सामाजिक संगठन का मूल आधार भी परिवार हैं। युवा पीढ़ी अपने नैतिक मुल्यों को भूल रही है। विवाह में पति-पत्नी एक पवित्र रिश्ते में बंधते है। इस पावन बंधन के भीतर तीसरे अंकित की उपस्थिति इसे अपवित्र बना देती है। वैवाहिक जीवन में पति, पत्नी से संपूर्ण आत्मसमर्पण व एकनिष्ठता की चाह रखता है जब कि पत्नी, पति से एकनिष्ठ प्रेम की आशा नहीं रख सकती।

'सैंया निकस गए,मैं ना लड़ी थी' कहानी में कुछ ऐसा ही समाज का चित्र लेखिका हमारे सामने रखती है। पती के होते हुए भी रेहाना को मजबूर होकर दूसरी शादी करनी पड़ती है। कहानी की नायिका रेहाना से कहती है,"अल्लाह बड़ारहम दिल है, तुझपर रहम करेंगे। मेरा रास्ता छोड़ दे.... मैं अब तेरी बीवी नहीं हूँ, तेरेछोटे भाई की बीवीहूँ..... बड़ा भाई जेठ होता है। जेठ की छाया नहीं पड़नी चाहिए। तूने मुझे हाथ लगा कर नापाक कर दिया.....छोड़ मुझे.....।"5उसपर अजहर कहता है, "दुहाई है तुझे.....जुल्म मत कर..... इतनी क्रूर मत बन।मेरी गलती की इतनी बड़ी सजा मत दे .....मैंबहुत तन्हा हूँ,कहाँ जाऊँगा। कहाँ रहूँगा। पहले मुल्क से गया और अब तेरे दिल से..... फिर जहान में कोई जगह नहीं बचती जहाँ मैं बस सकूँ।"6

रेहाना की दूसरी शादी होना अजहर को मान्य नहीं है। लेकिन समाज के लिए रेहाना ने दूसरी शादी की थीं। रेहाना ने अजहर कर छोटे भाई मजहर से शादी की है। अजहर बारह साल से गायब था। बारह साल बाद वह अपनी बीवी पर हक दिखाता है यह समाज को मान्य नहींहै।

आज समाज में ऐसे बर्ताव से परिवार बिखर चुके हैं।

भारतीय समाज में वृद्धों का अत्यंत उच्च एवं आदर्श स्थान है। वृद्धों की देखभाल परिवार की नैतिक जिम्मेदारी होती है। गीताश्री की कहानियों में'बाबूजी का बक्सा' कहानी में वृद्धोंके जीवन को वर्णित करती है। 75 साल के बाबूजी इस कहानी के प्रमुख पात्र है। बूढे बाबूजी अब अकेला रहना चाहते थे। बाबूजी अब गृहस्थी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहते हैं। एक दिन बाबूजी अचानक घर से गायब हो जाते हैं। घरवाले उन्हें ढूँढ रहे थे। उनका छोटा बेटा कहता है की, "उन्हें किसी कीमत पर ढूँढना होगा। कहाँ गए होंगे आखिर....गाँव तो जा नहीं सकते। वहाँ कौन देख रेख करेगा।सिर्फ पैसा से क्या होता है,कोई देखने वाला तो चाहिए। यहाँ उन्हें सब आराम था, ठाठ से जी रहे थे।"7 उसपर छोटे बेटे की पत्नी कहती है,"हम लोग तो कितना खयाल रखते थे उनका देवता-पित्तर की तरह रखते थे।यहाँ के लोग कहते थे कि ससुर का कितना खयाल रखती हो।"8

आज के समाज में वृद्धों का खयाल भी रखने वाले लोग हैं। बाबूजी घर से निकल जाते है लेकिन उनको उनके परिवार के लोग ढूँढ रहे हैं। आज के जमाने में ऐसे भी परिवार है जो वृद्धों का खयाल रखते हैं। समाज में ऐसे भी वृद्ध हैं, जोअपने परिवार वालों के साथ नहीं रहना चाहते हैं।

विवाह हमारे समाज में सभी धर्मों में एक पवित्र बंधन माना जाता है। संसार में पति-पत्नि में झगडा होता रहता है। 'ताप' कहानी में कहानी की नायिका शालू अपने माँ-बाप के झगड़े को मिटाना चाहती है। माँ को उदास देखकर शालू परेशान रहती है। शालू पापा को समझाती हैं तो पापा बड़बड़ाते है,"ले जा अपनी मम्मी को.... किसी काम की नहीं.... क्या करती है। सिवाय मुझसे लड़के के ..... इसको मुझमें इन दिनों सिर्फ बुराइयाँ ही नजर आती हैं। ले जा... रख अपने पास, तेरा घर भी तुड़वा देगी,इनके कहने में आयी तो। यहाँ से भी चली जाएँतो मैं भी चैन से रहूँगा। ना रहेगा बाँस, ना बजेगी बाँसुरी...।"9उसपर शालू कहती है, "पापा....कौन करेगा आपकी देखभाल? मम्मी है तो आपको अभी आराम है, सारी चीजे सामने मिल जाती हैं। क्यों लड़ते हो आप लोग,मेरी समझ में नहीं आता कि दोनों को प्रोब्लम क्या है.....।" शालू माया धुनती।"10

आज समाज में पति-पत्नी में हमेशा झगडा होता हैं। कहानी की

नायिका को अपनी माँ का उदास चेहरा नहीं देखा जा रहा था। एक पति अपने पत्नी बेटी के पास जाने के लिए कहता है। समाज में ऐसे भी कई परिवार हैं जो अपने पत्नी से अलग रहना चाहते हैं। एक स्त्री को अपने अधिकार होते हुए भी उसको अपने पति द्वारा दबोचा जाता है। उसको उसके अधिकार मिलने चाहिए।

आज के युग में बच्चे अपने माँ-बाप को पूछे बिना शादी का फैसला लेते है। अपने परिवार का और समाज का विचार नहीं करते है। बच्चे शादी के पहले जाति-पाति एक भी विचार करते नहीं है। "उनकी महफिल से हम उठ तो आए" इस कहानी में अजय दिल्ली के विश्वविद्यालय में शोध कार्य करने गया था। एक साल से इतना बदल जाता है कि साथ में अपनी दुल्हन को लेकर आता है। घरवालों को जब पता चलता है कि अजय शादी करके आया हैं तो माँ छाती कूट कर कहती है, "हाय, हाय बेटा हाथ से निकल गया।"11 उसपर पिता चिखकर कहते है, "पहले नौकरी कर लेता, फिर करता शादी। इतनी क्या जल्दी पड़ी थी। दोनों का खर्च कौन उठाएगा।"12

आज समाज में अजय जैसेअनेक बच्चे हैं जो अपने परिवार का विचार न करके खुद फैसला लेते हैं। समाज के हर लड़का और लड़की को अपने माँ-बाप का विचार करना चाहिए। घरवालों को अपना प्रेम बताकर उनकी इच्छा हो तो शादी करनी चाहिए।

निष्कर्ष:

21 वी सदी में नारी जीवन की समस्याएँ थोडे बहुत बदलाव के साथ वैसी ही बनी हुई है। लेखिका गीताश्री ने पारिवारिक समाज के अंतर्गत नारी जीवन से जुड़े विविध सरोकारों,टूटते दांपत्य संबंधवृद्धों का यथार्थ आदि बातों पर अपनी कलम चलाई है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में लेखिकाने वृद्ध जीवन की व्यथा का उल्लेख बहुत अच्छी तरह किया है। समाज में अंधकार को अपने शब्दों की रोशनी देते हुए अपने साहित्य का निर्माण किया है। नारी समस्या, दहेज समस्या,सरोवर उनकी कहानियों में मिलते हैं। लेखिका नेअपनी शोधपरक दृष्टी को अपनाते हुए अपने कहानियों में मिलते हैं। आधुनिक युग में बदलते परिवेश के साथ सामाजिक सारोकारों का भी बदलता रूप इनकी कहानियों में दिखता हैं।

संदर्भ सुचि:

1. डॉ. हरदेवबाहरी,राजपाल एंडसंस, दिल्ली,संस्करण 2022, पृष्ठ 825
2. त्रिपाठी,शंभूरत्नसमाजशास्त्र के मूलाधार,किताबघर प्रकाशन,कानपूर,1975,पृष्ठ33
3. डॉ. हरदेव बाहरी,राजपाल एंडसंस,दिल्ली,संस्करण 2022,पृष्ठ 811
4. त्रैमासिक,चिंतन सृजन अंक 2,अक्तूबर-दिसंबर 2005,आस्था भारती प्रकाशन,दिल्ली,पृष्ठ 89
5. गीताश्री,सैंया निकस गए,मैं ना लड़ी थी,मत्स्यगंधा,प्रथम संस्करण 2022,शिवना प्रकाशन, मध्यप्रदेश,पृष्ठ 8
6. गीताश्री, सैंया निकस गए,मैं ना लड़ी थी,मत्स्यगंधा, प्रथम संस्करण 2022, शिवना प्रकाशन, मध्यप्रदेश, पृष्ठ 8
7. गीताश्री,बाबूजी का बक्सा,मन बसंत तन जेठ, प्रथम संस्करण 2021,वनिका प्रकाशन,पृष्ठ 120
8. गीताश्री, बाबूजी का बक्सा,मन बसंत तन जेठ,प्रथम संस्करण 2021, वनिका प्रकाशन,पृष्ठ 120
9. गीताश्री,ताप,प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ, प्रथम संस्करण 2013,वाणी प्रकाशन,पृष्ठ 85
10. गीताश्री,ताप, प्रार्थना के बाहर और अन्य कहानियाँ,प्रथम संस्करण 2013,वाणी प्रकाशन,पृष्ठ85
11. गीताश्री,उनकी महफिल से हम उठतो आए,बलम कलकत्ता,दूसरा संस्करण 2021, प्रलेक प्रकाशन मुंबई,पृष्ठ 39
12. गीताश्री, उनकी महफिल से हम उठ तो आए, बलम कलकत्ता,दुसरा संस्करण 2021, प्रलेक प्रकाशन मुबई,पृष्ठ 39

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.